

## (A) व्यावहारिक कसौटियाँ (Practical Criteria)

1. उद्देश्यपूर्णता (Purposiveness)—उद्देश्यपूर्णता किसी भी उत्तम परीक्षण की मुख्य व्यावहारिक विशेषता होती है। उत्तम परीक्षण का निर्माण तभी किया जाता है जबकि हमारे पास कोई उद्देश्य, लक्ष्य या समस्या हो। अमूर्त परिस्थितियों में परीक्षण की रचना कदापि संभव नहीं है क्योंकि परीक्षण सदैव ही उद्देश्य पूर्ति का साधन मात्र है। जब हमारे पास कोई उद्देश्य ही नहीं होगा तो साधनों की क्या सार्थकता रह जायेगी इसलिए किसी भी परीक्षण की रचना करने से पूर्व समस्या लक्ष्य या उद्देश्य के सम्बन्ध में निर्णय कर लेना आवश्यक हो जाता है। उद्देश्य निर्धारण कार्य विषय या पाठ्यक्रम का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने के उपरान्त ही निश्चित किए जाते हैं। उदाहरणार्थ—एक बुद्धि परीक्षण का उद्देश्य 10 से 18 वर्ष के बालकों की सामान्य बुद्धि योग्यता का मापन करना होता है। एक निष्पत्ति परीक्षण के निर्माण का उद्देश्य हाई स्कूल स्तर के बालकों की निष्पत्ति योग्यता का मापन करना है।

2. व्यापकता (Comprehensiveness)—व्यापकता से तात्पर्य है कि परीक्षण में इस प्रकार के पदों (Items) एवं प्रश्नों को स्थान देना जो उस क्षेत्र के समस्त पहलुओं का मापन कर सकें अर्थात् व्यवहार को विस्तृत रूप से प्रदर्शित कर सकें। इसको दूसरे रूप में इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं कि परीक्षण इतना व्यापक हो कि वह अपने लक्ष्य की पूर्ति कर सके। हम किसी कक्षा के गणित विषय के ज्ञान की उपलब्धि का परीक्षण करते हैं तो प्रश्नों की संख्या इतनी हो कि पूरा निर्धारित विषय क्षेत्र उसके अन्दर समाहित हो जाएं। परीक्षण की व्यापकता परीक्षण निर्माता की स्वयं की सूँझ-बूँझ, बुद्धि एवं क्षमता पर निर्भर करता है।

3. मितव्ययिता (Economical)—मितव्ययिता का तात्पर्य है कि परीक्षण का निर्माण समय, श्रम एवं धन के व्यय को ध्यान में रखकर किया जाना। परीक्षण में पदों की संख्या व्यापकता की दृष्टि से पर्याप्त होनी चाहिए, पर यह भी ध्यान रखना चाहिए उसमें कम समय श्रम और धन की आवश्यकता हो। संक्षिप्त रूप से हम कह सकते हैं कि एक

उत्तम परीक्षण समय, श्रम एवं धन की दृष्टि से मितव्ययी होना चाहिए। यही कारण है कि समय श्रम एवं धन के महत्व को स्वीकारते हुए आज व्यक्तिगत परीक्षण (Individual Tests) की अपेक्षा सामूहिक परीक्षणों (Group Tests) का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। परीक्षण की मितव्ययिता के सन्दर्भ में फ्रीमैन ने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि—“परीक्षण इतना लम्बा नहीं होना चाहिए कि वह नीरसता, संत्रास या निषेधवृत्ति उत्पन्न करें, क्योंकि जहाँ ये कारक पाये जाते हैं वहाँ प्रयोज्य अपने निष्पादन का श्रेष्ठ स्तर प्रस्तुत नहीं कर पाते।”

“The length of the test should not be so great as to produce boredom, satiation or negativism, for when these set in, the subject does not perform at his best level.” —Freeman

**4. उपयोगिता (Usability)**—उपयोगिता का तात्पर्य सहजता या सुगमता से लिया जाता है। सुगमता के अन्तर्गत दो बातों को स्थान दिया जाता है—(i) प्रशासन (ii) फलांकन एवं निर्वचन की सरलता। परीक्षण इतना सरल होना चाहिए कि सीमित उपलब्ध साधनों में भी उसका प्रशासन हो सके। निर्देश इतने सरल, स्पष्ट एवं संक्षिप्त होने चाहिए कि परीक्षार्थी उन्हें आसानी से समझ सकें। उत्तम परीक्षण की एक यह भी विशेषता होती है कि उसके परीक्षण पदों का फलांकन शीघ्रता, सरलता एवं दक्षता से किया जा सके इसलिए प्रमापीकृत परीक्षणों में उत्तर कुंजी या फलांकन कुंजी (Scoring Key) तथा फलांकन स्टेन्सिल (Stencil) का प्रयोग किया जाता है। साथ ही मैन्युअल (Manual) में ही फलांकन करने के निर्देशों को स्पष्ट कर दिया जाता है। परीक्षण की निर्वचन विधि भी अत्यन्त स्पष्ट होनी चाहिए। निर्वचन विधि इस प्रकार की होनी चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति उन प्राप्तांकों का एक ही भाँति निर्वचन कर सके अर्थात् निवर्चन विधि वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए।

**5. सर्वमान्यता (Acceptability)**—उत्तम परीक्षण सर्वमान्य या सर्व स्वीकृत होना चाहिए। परीक्षण इस प्रकार का होना चाहिए कि उसका प्रयोग उन समस्त व्यक्तियों द्वाहरणार्थ—विने साइमन का बुद्धिपरीक्षण एक ऐसा परीक्षण है जो कि हर परिस्थिति में किसी भी स्तर के व्यक्ति को ग्राह्य है।

**6. प्रतिनिधित्वता (Representativeness)**—एक उत्तम परीक्षण को प्रतिनिधित्वकारी होना चाहिए। व्यवहार के जिन-जिन विन्दुओं या पहलुओं के मापन हेतु करना उसकी रचना की गई है उनका प्रतिनिधित्वकर्ता (प्रतिनिधि रूप से) के रूप में मापन करना उसकी प्रमुख विशेषता है। इस सन्दर्भ में ब्राउन (F.G. Brown) ने कहा है कि “एक परीक्षण उस समय प्रतिनिधिपूर्ण होता है जब परीक्षण के पद मापित किये जा रहे व्यवहार से सम्बन्धित हो।”

(A test is representative when the test items are similar to the behaviour we are interested in measuring) —F.G. Brown